ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-12* March-2021
Anthology : The Research

उरई जनपद के प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विज्ञान एवं कला वर्ग से सम्बन्धित शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा–शिक्षण व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of Classroom-Teaching Behavior of Urban and Rural Students Belonging To Science and Art Classes In Training Colleges of Orai District

Paper Submission: 01/03/2021, Date ofAcceptance: 20/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

विजय प्रताप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
बी0वी0एम0 कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एजुकेशन,
ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

शिक्षा मानव का मूल साधन है। इसके द्वारा ही मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। इसी के द्वारा मनुष्य के ज्ञान और कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है तथा वह सभ्य, सुसंस्कृति एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

कक्षा की सामाजिक परिस्तिथी में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया होती है। जो एक संज्ञात्मक क्रिया कलाप है। शिक्षण अधिगम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक अपनी कक्षा की सामाजिक सांवेगिक जलवायु पर कितना ध्यान देता है और इसके अनुरूप अपने क्रियाकलापों में कितना परिवर्तन कर लेता है। दूसरी ओर किसी कक्षा का सामाजिक सांवेगिक वातावरण प्रमुख रूप से शिक्षण के कक्षा–कक्ष व्यवहार पर निर्भर रहता है। इस प्रकार शिक्षक तथा कक्षा का वातावरण एक–दुसरे पर निर्भर करता है।

प्रस्तुत शोध में "उरई जनपद के प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विज्ञानं एवं कला वर्ग से सम्बंधित शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा–शिक्षण व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन" किया गया है, प्रस्तुत शोध कार्य शून्य परिकल्पनाओं को आधार मानकर संपन्न किया गया है, प्रस्तुत शोध में घटनोत्तर अनुसन्धान विधि का प्रयोग किया गया है, प्रस्तुत शोध का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्श (Random Sampling)के द्वारा उरई जनपद के 2 प्रशिक्षण महाविद्यालयों (1) दयानन्द वैदिक महाविद्यालय (2)गाँधी महाविद्यालय के 50 छात्राध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया हैं जिसमे 25 विज्ञान तथा 25 कला वर्ग से सम्बंधित है, इसी प्रकार 25 शहरी तथा 25 ग्रामीण क्षेत्र से सम्बंधित है, प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवहार के निरिक्षण और विश्लेषण के लिए फ्लैंडर्स कि दस वर्गीय अन्तः क्रिया पद्धति का प्रयोग कर प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या किया गया है।

Education is the basic means of human beings. It is through this that the innate powers of human beings are developed. By this, the knowledge and art skills of human beings are increased and behavior changes and he is made a civilized, cultured and capable citizen.

In the social situation of the classroom, the teaching-learning process takes place which is a cognitive activity. The success of teaching learning depends on how much the teacher pays attention to the social emotional climate of his classroom and how much he changes his activities accordingly. On the other hand, the social interactive environment of a classroom mainly depends on the classroom behavior of teaching. In this way, the environment of the teacher and the class depends on each other.

The presented research work has been done on the basis of the null hypothesis, in the presented research, the method of post-research research has been used. In order to study the research presented, the researcher has selected 50 students from 2 training colleges of Orai district as Sample by Random Sampeling, in which 25 are related to science and 25 art classes, similarly 25 urban and 25 rural areas. In relation to the study, the study has analyzed and explained the components using Flanders ten-class interaction method for inspection and analysis of teaching behavior.

मुख्य शब्द : कक्षा–शिक्षण, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, दस वर्गीय अन्तः क्रिया पद्धति।
Classroom Teaching, Teaching Learning Process, Ten-Class Interaction Method.

प्रस्तावना

शिक्षा मानव का मूल साधन है। इसके द्वारा ही मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। इसी के द्वारा मनुष्य के ज्ञान और कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, तथा वह सभ्य, सुसंस्कृति एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

कक्षा की सामाजिक परिस्तिथी में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया होती है। जो एक संज्ञात्मक क्रिया कलाप है। शिक्षण अधिगम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक अपनी कक्षा की सामाजिक सांवेगिक जलवायु पर कितना ध्यान देता है और इसके अनुरूप अपने क्रियाकलापों में कितना परिवर्तन कर लेता है। दूसरी ओर किसी कक्षा का सामाजिक सांवेगिक वातावरण प्रमुख रूप से शिक्षण के कक्षा–कक्ष व्यवहार पर निर्भर रहता है। इस प्रकार शिक्षक तथा कक्षा का वातावरण एक–दुसरे पर निर्भर करता है।

सभी शिक्षण व्यवस्था का केंद्र बिंदु शिक्षक होता है शिक्षक समाज के नागरिको की गुणवत्ता को बढ़ाते है। और नागरिक राष्ट्र का निर्माण करते है। शिक्षक के कार्य एवं व्यवहार छात्रों के प्रेरणा स्रोत है। यद्यपि वह वर्तमान समय में अर्थात मनोवैज्ञानिक युग में शिक्षक का स्थान निर्देशक, पथ प्रदर्शक एवं अभिप्रेरक के रूप में माना जाता है। शिक्षक जब कक्षीय परिस्तिथियों में शिक्षण करता है तो सामान्यता शिक्षक कथनो के द्वारा अपनी पाठ्यवस्तु को पूरा करता है, शिक्षक व छात्रों के बीच चलने वाली अन्य प्रक्रिया शिक्षक व्यवहार की प्रमुख विशेषता है,इस अन्तः क्रिया विशेषणात्मक अध्ययन से इसके स्वरुप के विमीय आवश्यक पक्ष उजागर होते है। जिन्हे शिक्षण प्रक्रिया के अंदर समाविस्ट करने पर शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाया जाता है। एक कुशल शिक्षक राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में सहायक होता है,अध्यापक अपने कक्षा कक्ष में बैठे–बैठे प्रान्त और राष्ट्र की सीमाओं को लांध कर समस्त विश्व के क्रिया–कलापो एवं गतविधियों का अध्ययन और उसकी समीक्षा करता है और उसके तथ्यों को शिक्षण के माध्यम से देश के भावी नागरिको को देश में होने वाली सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करता है। इसीलिए सिर्फ देश ही नहीं बल्कि समस्त मानव समाज की उन्नति एवं प्रगति का दायित्व अध्यापको के कंधो पर ही निर्भर है।

डॉ० राधाकृष्णन के शब्दों में, The Teacher place in society in vital importance. He acts as the pivot for the transmission of intellectual traditions and technical skills from generation to generation and help to keep lamp of civilization learning."

अध्यापको के महत्व को प्रकाशित करते हुए। lexander the great की निम्न उक्ति बहुत महत्वपूर्ण है– "I own my birth to my father but life to my Teacher."

माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की मेरुदंड है। माध्यमिक शिक्षा के योग में पदार्पण करने वाला छात्र आपने जीवन के दरवाजे पर खड़ा एक उचित मार्गदर्शन की अपेक्षा के लिए शिक्षक का सहयोग चाहता है। वह अपनी शिक्षा में किस ओर कदम बढ़ाये इसका निर्णय उसके लिए एक समस्या बनकर उसके समक्ष उपस्तिथि रहती है। उसको शिक्षा का प्रत्येक क्षेत्र आकर्षित लगता है। यह वह संक्रमण काल है जब उस छात्र को एक उचित मार्गदर्शन की अत्यधिक आवश्यकता होती है जो उसके जीवन को एक सही दिशा की ओर मोड़ सकता है। ऐसी स्थिति में एक कुशल शिक्षक अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए अपने छात्रों को उनकी छमता, योग्यता,प्रतिभा एवं रूचि को ध्यान में रखते हुए,साथ ही आने वाले भविष्य में उसकी उपयोगिता के आधार पर उन्हें सही विषय चुनने के लिए मार्गदर्शित करते है, तथा प्रोत्साहित करते है।

शोध कथन

"उरई जनपद के प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विज्ञानं एवं कला वर्ग से सम्बंधित शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा–शिक्षण व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन "

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में विज्ञानं एवं कला वर्ग से सम्बंधित छात्राध्यापकों का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के उद्देस्य निम्लिखित है–

1. विज्ञान एवं कला से सम्बंधित छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर तुलनात्मक अध्ययन करना
2. शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर तुलनात्मक अध्ययन करना

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य शून्य परिकल्पनाओं को आधार मानकर संपन्न किया गया है। जो निम्नलिखित है–

1. विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की शोध विधि

प्रस्तुत शोध में घटनोत्तर अनुसन्धान विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्श (Random Sampling) के द्वारा उरई जनपद के 2 प्रशिक्षण महाविद्यालयों (1) दयानन्द वैदिक महाविद्यालय (2)गाँधी महाविद्यालय के 50 छात्राध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया हैं जिसमे 25 विज्ञान तथा 25 कला वर्ग से सम्बंधित है, इसी प्रकार 25 शहरी तथा 25 ग्रामीण क्षेत्र से सम्बंधित है

सारणी संख्या – 1

क्षेत्र	विज्ञान वर्ग	कला वर्ग	योग
शहरी	**13**	**12**	**25**
ग्रामीण	**12**	**13**	**25**
योग	**25**	**25**	**50**

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवहार के निरिक्षण और विश्लेषण के लिए फ्लैंडर्स कि दस वर्गीय अन्तः क्रिया पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान (Mean)
2. सयुंक्त मानक विचलन (PSD)
3. विचलन की मानक त्रुटि (SED)
4. क्रांतिक अनुपात (t)

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पनाओं का परीक्षण

1. विज्ञानं एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर अंतर

संवर्ग	संख्या	मध्यमान	विचलन	सयुंक्त मानक विचलन	विचलन की मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
विज्ञान	25	.24	.04	.20	0.56	0.71	.05
कला	25	.28					

उपरोक्त तालिका के आधार पर क्रांतिक अनुपात (t) .71 है, जो किसी भी स्तर पर .05 विश्वाश के स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे स्पश्ट होता है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "विज्ञानं एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (Direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है। "जो कुछ अंतर है वह प्रक्षण की त्रुटि के कारण है, अतः शोध समस्या की प्रथम शून्य परिकल्पना .05 विश्वाश के स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या – 3

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर अंतर

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	विचलन	सयुंक्त मानक विचलन	विचलन की मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
शहरी	25	.39	.25	.14	0.4	6.41	.05
ग्रामीण	25	.14					

उपरोक्त तालिका के आधार पर क्रांतिक अनुपात (t) 6.41 है, जो किसी भी स्तर पर .05 विश्वाश के स्तर पर सार्थक है। इससे स्पश्ट होता है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है " .05 विश्वाश के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। शोध निष्कर्ष

इस प्रकार शोध अध्ययन में शोधकर्ता को निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. शोध अध्ययन के आधार पर,स्पश्ट होता है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "विज्ञानं एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार में अन्तः क्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है। "जो कुछ अंतर है वह प्रक्षण की त्रुटि के कारण है, शोध के आधार पर ये कहा जा सकता है कि विज्ञानं एवं कला वर्ग के छात्राध्यापक कक्षा में सामान रूप से व्यवहार करते है।
2. शोध अध्ययन के आधार पर,स्पश्ट होता है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अंतःक्रिया सम्बन्धी अप्रत्यक्ष (Indirect) एवं प्रत्यक्ष (direct) व्यवहार पर सार्थक अंतर नहीं है " .05 विश्वाश के स्तर पर अस्वीकृत की जाती है अर्थात शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राध्यापक कक्षा में भिन्न–भिन्न व्यवहार करते है। सारणी में शहरी छात्राध्यापकों का मध्यमान ग्रामीण छात्राध्यापकों से अधिक है, जो ये प्रकट करता है कि शहरी छात्राध्यापकों का कक्षा शिक्षण व्यवहार ग्रामीण छात्राध्यापकों से अच्छा है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अधययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राध्यापक सामान व्यवहार करते है। जब शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का तुलना किया गया तो ये पाया गया कि शहरी छात्राध्यापकों का कक्षा शिक्षण व्यवहार ग्रामीण छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार से अच्छा है। साथ –साथ यह भी ज्ञात हुआ कि शहरी छात्राध्यापक ग्रामीण छात्राध्यापकों की तुलना में अप्रत्यक्ष व्यवहार अधिक करते है। यही कारण है कि शहरी छात्राध्यापकों द्वारा पढ़ाये गए छात्रों कि शैछिक उपलब्धि ग्रामीण छात्राध्यापकों द्वारा पढ़ाये गए छात्रों कि शैछिक उपलब्धि से अधिक होती है।

अध्ययन के उपरोक्त निष्कर्षो से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण छात्राध्यापकों का शिक्षण व्यवहार शहरी छात्राध्यापकों से निम्न स्तर का है। ग्रामीण छात्राध्यापकों द्वारा अपने शिक्षण में सुधार लाने पर ही गुणवत्ता बढायी जा सकती है। इसके लिए ग्रामीण छात्राध्यापकों को, और सुविधाएं उपलब्ध कराना चाहिए, जिससे उनके कक्षा शिक्षण में सुधार लाया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कौर जगदीप, पंजाब विश्वविद्यालय (2018), "नियंत्रण के नियंत्रण के संबंध में शिक्षक प्रशिक्षुओं की शिक्षक प्रभावशीलता और समस्या सुलझाने के कौशल पर व्यक्तित्व विकास मॉड्यूल का प्रभाव"*
2. *शमीना ई – मुमतास एन एस, (2018), "माध्यमिक स्तर पर भावी शिक्षकों के लिए एक कक्षा प्रबंधन योग्यता वृद्धि कार्यक्रम की प्रभावशीलता"*
3. *बेस्ट. जे. डब्ल्यू. और कहन. जे. वी. (2016), शिक्षा में अनुसंधान, 10वां एड. पियर्सन शिक्षा भारत।*
4. *अहलूवालिया. ए. और कमलप्रीत, (2016) विश्वविद्यालय के शिक्षकों के बीच नियंत्रण का दबाव,अनुभूतिमूलक अध्ययन. इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल और अनुसंधान, 3 (1), 2394–3386।*
5. *अकाया, आर., और अकोल, बी (2016), शिक्षकों के नियंत्रण के बीच संबंध और नौकरी से संतुष्टिरू एक मिश्रित विधि का अध्ययन, इंटरनेशनल ऑनलाइन जर्नल ऑफ शैक्षिक विज्ञान, 8 (3), 71–82*
6. *भंवरा, पी0 (2013), व्यवहार समस्या से संबंधित शिक्षकों के बीच ज्ञान स्कूल के बच्चों में, सिंहगढ़ जर्नल ऑफ नर्सिंग, 1 (2), 21–23*
7. *दूबे, आर0 और ओर्पिनस, पी0 (2012), अत्यधिक स्कूल अनुपस्थिति को समझना स्कूल मना व्यवहार, बच्चे और स्कूल, 31 (2), 87–95।*
8. *हेनरी, ई0 गैरेट (2008), मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, दिल्ली सुरजीत प्रकाशन, पीपी. 247–308*
9. *क्लूनीस–रॉस पी0, लिटिल, ई0 और किनुहिस, एम0 (2008), स्वयं की सूचना दी और वास्तविक उपयोग*
10. *सक्रिय और प्रतिक्रियाशील कक्षा प्रबंधन रणनीतियों और उनके संबंध शिक्षक तनाव और छात्र व्यवहार के साथ, जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 28 (6), 693–710।*
11. *जैक, सी. रिचर्ड्स और थियोडोर एस. रोडर्स (2001), दृष्टिकोण और मेथड्स इन लैंग्वेज टीचिंग, दूसरा संस्करण, 192–203*
12. *हंस, आर0 (1986), 'टीचिंग एंड टीचिंग के बीच संबंध प्रभावशीलता' पीएच.डी. थीसिस, मेरठ विश्वविद्यालय।*
13. *भारत शिक्षा आयोग (1966), शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, 1964–66, शिक्षा और राष्ट्रीय विकास (खंड 2) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार*